तहलका

जुझारूपन का संतस्वरूप

एक पुस्तक जो एक महान पुरुष, एक देश के संपूर्ण इतिहास और दो अन्य देशों - जिनमें से एक अपना हो - की आत्मा के दर्शन कराती हो, अपने देश पर गर्व करने की सही और कई वजहें देती हो, ऐसी पुस्तक को न पढ़ने का शायद ही कोई कारण हो सकता है.

मुश्किल से भी ऐसा होने की गुंजाइश तब खत्म हो जाती है जब पुस्तक उस महान पुरुष के द्वारा ही लिखी गई हो. *मेरा देश निकाला* दलाई लामा की आत्मकथा है. किताब में लिखे दलाई लामा के संघर्ष हमें गांधी जी के संघर्षों की याद दिलाते हैं और उनका आत्मकथा लिखने का तरीका भी. गांधी जी ने अपनी आत्मकथा *मेरे सत्य के प्रयोग* में अपने जीवन से जुड़े तथ्यों को जिस निर्भीक तटस्थता के साथ सामने रखने के जतन किए हैं वैसा ही कुछ इस पुस्तक में भी नज़र आता है - पुस्तक में दलाई लामा

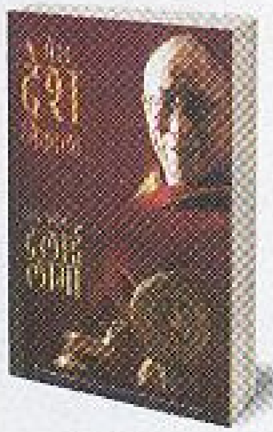

पुस्तक : मेरा देश निकाला (आत्मकथा)
लेखक : दलाई लामा
कीमत : 195 रुपए
प्रकाशक : राजपाल एंड संस

अपने निर्वासन के सबसे बड़े कारक माओ की प्रशंसा करते नज़र आते हैं तो ज़रूरत पड़ने पर अपने और तिब्बत के सबसे करीबी मित्र पंडित नेहरू की आलोचना से भी परहेज नहीं करते. मगर ऐसा नहीं है कि इसमें कोई कमी ही नहीं है. मगर उनका लेना-देना दलाई लामा से कतई नहीं है. इसकी वजह अंग्रेजी से हिंदी में हुए अनुवाद से है और इस बात से है कि मूल पुस्तक लिखी तो 1990 के आसपास गई थी मगर उसका हिंदी अनुवाद अब आया है.

हालांकि पुस्तक का हिंदी अनुवाद अन्य अनुवादित पुस्तकों से बेहतर है लेकिन फिर भी कहीं-कहीं यह आपकी समझ का इम्तहान ले ही लेता है. किंतु यदि इस एक वजह से हम *मेरा देश निकाला* नहीं पढ़ेंगे तो शायद इस तरह की पुस्तकों से हमें बिल्कुल किनारा कर लेना होगा.

यह पुस्तक हमें यह भी सिखाती है कि सच्चाई कल्पना की हर उड़ान से ज्यादा बड़ी, ज्यादा रोचक और ज्यादा जुझारू होती है.

संजय दुबे